सरयू राय: झारखंड की राजनीति के अंतरात्मा के रक्षक

विकांत सहाय

ऐसे समय में, जब राजनीति का मूल्यांकन बढ़ते हुए केवल छवि, प्रचार और नारों के आधार पर किया जा रहा है, सरयू राय भारत के उन विरले सार्वजनिक व्यक्तित्वों में से एक हैं, जिनकी राजनीति निरंतर जन-सक्रियता, पर्यावरण संरक्षण और भ्रष्टाचार के विरुद्ध अडिग संघर्ष पर आधारित रही है।

बिहार और झारखंड के बड़े घोटालों का पर्दाफाश करने से लेकर अपने ही राजनीतिक परिवेश के शक्तिशाली तंत्र को चुनौती देने तक, राय ने ऐसी प्रतिष्ठा अर्जित की है जो दलगत सीमाओं से कहीं आगे जाती है। उनकी यात्रा केवल चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं रही, बल्कि गहराई से हस्तक्षेपकारी रही है। अवैध खनन, सार्वजनिक व्यय या प्रशासनिक विफलताओं पर सवाल उठाने की बात हो, उन्होंने बार-बार सुविधा के बजाय संघर्ष का मार्ग चुना है।

लेकिन राजनीति से परे, उनका शायद सबसे स्थायी योगदान उस पर्यावरणीय आंदोलन में निहित है, जिसे उन्होंने युगांतर भारती के माध्यम से आकार दिया। यह संगठन चुपचाप झारखंड में पारिस्थितिक संरक्षण के लिए सबसे प्रतिबद्ध आवाज़ों में से एक बनकर उभरा है। उनके मार्गदर्शन में दामोदर बचाओ आंदोलन, स्वर्णरेखा प्रदूषण मुक्ति अभियान, सेव सारंडा अभियान और जल जागरूकता अभियान जैसे प्रयासों ने पर्यावरणीय क्षरण को मुख्यधारा के सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाया।

पर्यावरणीय जवाबदेही पर बोलते हुए सरयू राय अक्सर कहते रहे हैं, "ऐसे समय में जब विकास को केवल कंक्रीट और पूंजी के पैमाने पर मापा जा रहा है, हमें यह याद रखना चाहिए कि नष्ट हो चुकी नदी या जंगल को नीति-पत्रों के सहारे फिर से जीवित नहीं किया जा सकता। सार्वजनिक जीवन का वास्तविक अर्थ तभी है, जब वह लोगों, प्रकृति और आने वाली पीढ़ियों की रक्षा करे।"

जब खनिज संपदा से समृद्ध झारखंड की नदियाँ औद्योगिक प्रदूषण से जूझ रही थीं, तब युगांतर भारती ने पर्यावरणीय सक्रियता के लोकप्रिय होने से बहुत पहले ही वैज्ञानिक अध्ययन, जल गुणवत्ता परीक्षण और जन-जागरूकता अभियानों की शुरुआत कर दी थी। संगठन ने संरक्षण, जैव विविधता और सतत विकास पर केंद्रित विश्लेषणात्मक प्रयोगशालाएँ, सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम और प्रशिक्षण मॉड्यूल भी स्थापित किए।

सरयू राय को राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाता है यह तथ्य कि उन्होंने शासन और जवाबदेही को कभी अलग-अलग नहीं माना। सरकार में रहते हुए भी उन्होंने उन निर्णयों का सार्वजनिक रूप से विरोध

किया, जिन्हें वे कानूनी या नैतिक रूप से संदिग्ध मानते थे। उनके भ्रष्टाचार-विरोधी अभियानों ने आगे चलकर व्यापक जन आंदोलनों का रूप लिया, जिनका उद्देश्य प्रणालीगत सुधार और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देना था।

आज के राजनीतिक परिवेश में, जहाँ वैचारिक रुख अक्सर रातोंरात बदल जाते हैं, सरयू राय का सार्वजनिक जीवन एक अलग आदर्श प्रस्तुत करता है–ऐसा आदर्श जो सत्ता से कम और निरंतरता से अधिक संचालित होता है। समर्थक उन्हें दृढ़निश्चयी कह सकते हैं, आलोचक उन्हें असुविधाजनक मान सकते हैं, लेकिन बहुत कम लोग इस तथ्य से इनकार कर सकते हैं कि वे दशकों पहले चुने गए अपने मूल मुद्दों–स्वच्छ शासन, पर्यावरणीय न्याय और सार्वजनिक जवाबदेही–के प्रति लगातार प्रतिबद्ध रहे हैं।

और शायद यही कारण है कि सार्वजनिक जीवन में कई दशकों के बाद भी सरयू राय आज उतने ही प्रासंगिक बने हुए हैं।

(लेखक प्रख्यात पत्रकार हैं)